8 लोभ से मुक्ति

- परिचयात्मक प्रश्न - लोभ से आप क्या समझते हैं?
  - लोभी की क्या पहचान है?
  - क्या आपने किसी को लोभ करते देखा है?
  - क्या लोभी आवश्यकता से अधिक संग्रह करता है।
- प्रतिबिंब - बालकों को लोभ का परिणाम बताते हुए उसके दुष्परिणामों के प्रति जागरुक करना।
- परिकल्पना - क्या आपने लोभी संयासी की कहानी पढ़ी या सुनी है?

बहुत दिनों की बात है, गंगा नदी के तट पर हिरण्याभ नाम का एक साधु रहता था। उसने अपना घर-परिवार सभी त्याग दिया था। वह अकेला ही वन में रहता और भगवान का भजन करता था। उस साधु में अनेक गुण थे। वह दूसरों की सहायता करता था, प्राणीमात्र पर दया करता था। परंतु उसमें एक बड़ा अवगुण भी था, वह था- लालच। उसने बहुत-सी स्वर्ण-मुद्राएँ अपने पास जमा कर रखी थीं। न तो वह उन्हें किसी को देता था और न स्वयं उस धन का कोई उपयोग ही करता था।

एक बार साधु सोचने लगा कि मेरी आयु बहुत हो गई है। पता नहीं कब मृत्यु का ग्रास बनना पड़ जाए। अतएव एक बार सभी तीर्थों की यात्रा कर लेनी चाहिए। इसी बहाने परोपकार भी हो जायेगा।

प्राचीन भारत की प्रथा थी कि संयासी तीर्थों में एकत्रित जन-समुदाय को उपदेश देते थे। उनकी विविध समस्याओं को सुलझाने का प्रयास भी करते थे। इस प्रकार से वे जन-कल्याण हेतु अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया करते थे।

हिरण्याभ ने यात्रा की पूरी तैयारी कर ली थी। अपने वस्त्र और अन्य उसने एक पोटली में बाँध लिए। धार्मिक पुस्तकें, जप करने की माला आदि भी रख लीं। अपनी स्वर्ण-मुद्राओं की थैली भी उसने पोटली में छिपाकर रख ली थी। पीठ पर पोटली लादे, एक हाथ में कमंडल और एक हाथ में लाठी लेकर वह गंगा नदी के किनारे-किनारे पदयात्रा करने लगा।

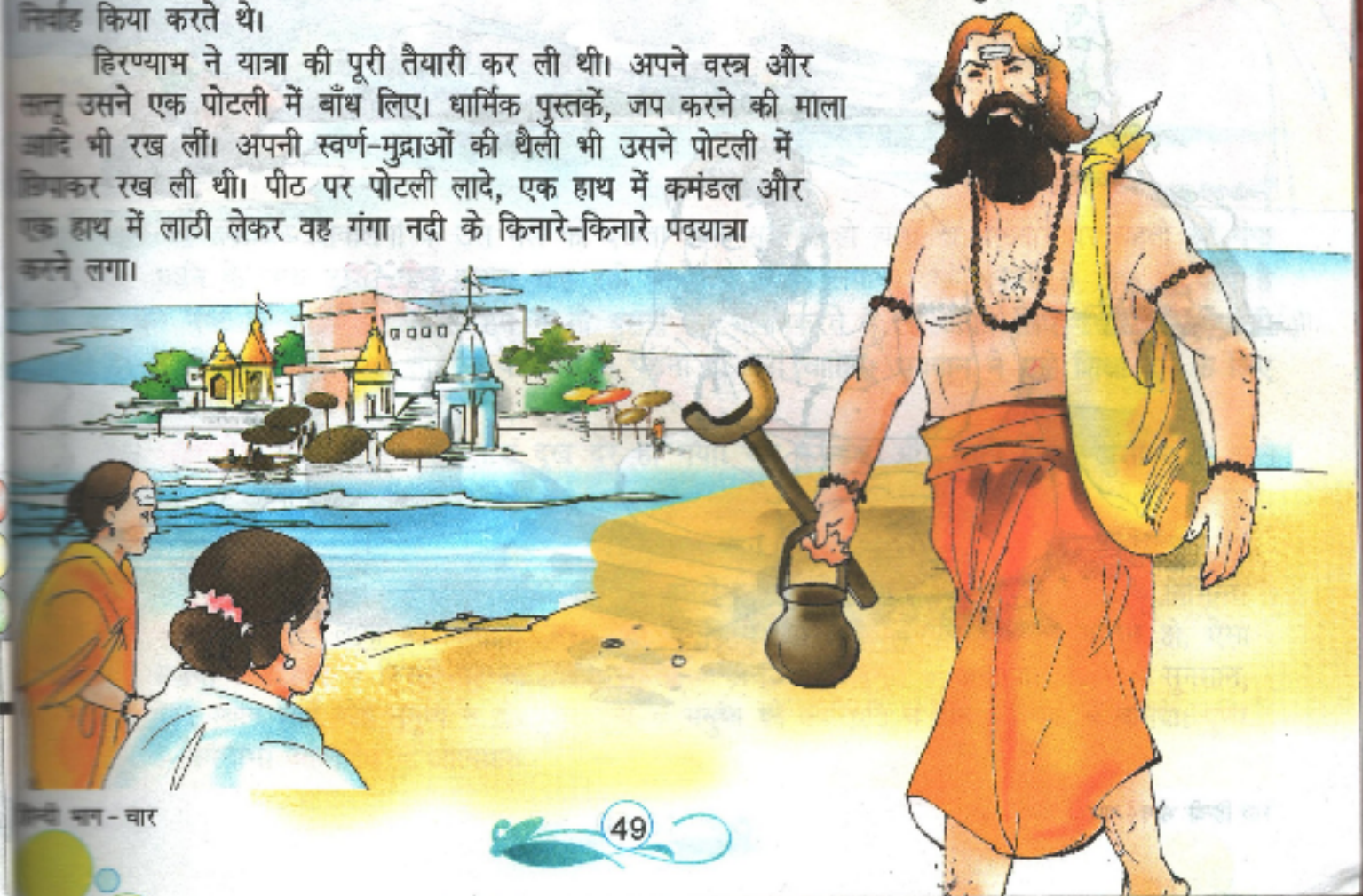

इस प्रकार मार्ग में रुकते-चलते हिरण्याभ कुछ दिनों बाद सात ऋषियों की तपस्थली सप्त सरोवर जा पहुँचा। वहाँ एक-दो दिन रुकने के बाद उसे बद्रीनाथ जाना था। अब तक का रास्ता तो सीधा-सादा था। वह गंगा के किनारे-किनारे चलता रहा था। मार्ग में अनके तीर्थयात्री भी मिलते रहे थे। परंतु अब उसे पहाड़ों की दुर्गम चट्टानें भी चढ़नी थीं। रास्ते में बहुत-से यात्रियों के मिलने की आशा भी नहीं थी। हिरण्याभ ने सुन रखा था कि पहाड़ी कंदराओं और घने वनों में लुटेरे छिपे रहते हैं। वे रास्ता चलते यात्रियों को लूट लेते हैं।

उसे अपने धन के विषय में चिंता होने लगी। वह समझ नहीं पा रहा था कि धन का क्या करें? क्योंकि साथ ले चलने में तो डर था कि डाकू धन के लोभ से कहीं उसके प्राण ही न ले लें। जिस स्थान पर साधु था, वह स्थान भी उसके लिए अपरिचित था। सभी व्यक्ति भी अपरिचित थे। अतएव वह किसी को धन सौंपकर भी नहीं जा सकता था।

कई दिनों तक सोच-विचार करने के बाद हिरण्याभ को सहसा एक अद्‌भुत उपाय सूझा। दूसरे दिन वह दिन के दूसरे पहर में ही उठ बैठा। गंगा के किनारे जाकर नित्यकर्म से निवृत्त हुआ। स्नान-ध्यान आदि किया, फिर गंगा के बालुकमाय तट पर निर्जन स्थान की ओर बढ़ता ही चला गया।

लगभग दो-ढाई मील चलने के बाद हिरण्याभ रुका। उसने चारों ओर निगाह दौड़ाई। वातावरण में अभी अंधेरा-सा छाया हुआ था। वह स्थान जन-शून्य था। हिरण्याभ ने बालू में दो हाथ गहरा गड्ढा खोदा, स्वर्ण-मुद्राओं की थैली निकालकर चुपचाप उसमें रख दी। ऊपर से बालू से उसे पाट दिया। फिर उसके ऊपर गंगा के काले-काले पत्थर चुनकर बालू और पत्थरों से ऊँचा-सा शिवलिंग बनाया, पुष्प आदि से उसकी पूजा की। इसके बाद फिर हिरण्याभ खुशी-खुशी आगे तीर्थयात्रा पर बढ़ गया।

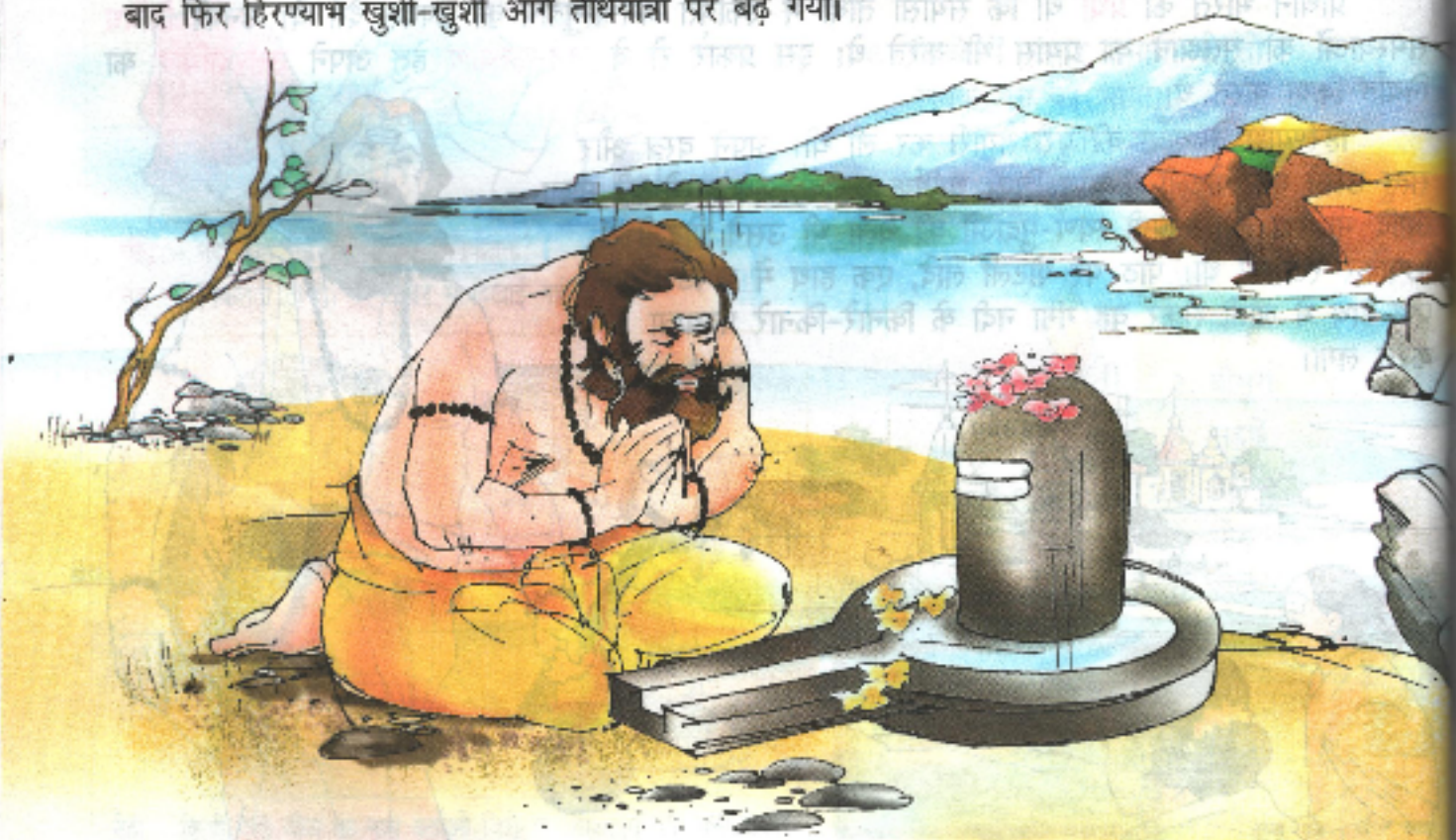

हिरण्याभ के जाने के चार-पाँच दिन बाद तीस-चालीस तीर्थयात्रियों का एक दल वहाँ से निकला। उस दल में श्रेष्ठबुद्धि नाम का एक वणिक भी था। उसकी दृष्टि पत्थर और बालू से बने शिवलिंग पर पड़ी। उसने यात्रियों को वहीं रुकवा लिया और बोला- "अरे! देखो इस स्थान पर किसी ने शिवलिंग बनाया है। इसकी पूजा भी की है। चलों, हम सब भी ऐसा करें, इससे निश्चित ही पुण्य मिलेगा।'

फिर क्या था, सभी यात्री जुट पड़े। एक ही घंटे में वहाँ उतने ही बड़े चालीस शिवलिंग दिखाई देने लगे। फिर तो जो भी दल आता, वह वैसे ही शिवलिंग बनाता, उनकी पूजा करता, फिर आगे बढ़ता।

लगभग एक महीने बाद हिरण्याभ तीर्थ यात्रा से वापिस लौटा। परन्तु यह क्या! जहाँ धन गाड़ा था, उस स्थान को देखकर तो वह दंग रह गया। वहाँ तो दूर तक घेरे में एक समान सैंकड़ों शिवलिंग बने हुए थे। यह पता लगाना भी बड़ा कठिन था कि उसका शिवलिंग कौन-सा है। हिरण्याभ का सिर चकराने लगा और वह वहीं बैठ गया।

बहुत देर तक वह शिवलिंगों के उस मेले को देखता रहा। सूर्यास्त हो चला था। किनारे पर बहती हुई गंगा 'कलकल' ध्वनि के साथ उससे कुछ कहना चाह रही थी। वह सोचने लगा- 'देखो, किसी ने ठीक ही कहा है कि वह धन नष्ट हो जाता है, जिससे हम न तो दूसरों का भला करते हैं, न अपने लिए उसका उपयोग ही करते हैं। मैं तो संयासी हूँ। मुझे तो धन के लोभ में पड़ना ही नहीं चाहिए। भगवान ने मुझे शिक्षा देने के लिए ही यह सब किया है।

इस आत्मबोध से हिरण्याभ का सारा दुख दूर हो गया। वह कमंडल और लाठी लेकर खुशी-खुशी आगे की यात्रा पर बढ़ गया।

शब्दार्थ त्यागना = छोड़ देना। परोपकार = दूसरों का भला करना। प्रथा = रीति। विविध = विभिन्न। जन-कल्याण = लोगों की भलाई। उत्तरदायित्व = जिम्मेदारी। दुर्गम = जहाँ पहुँचना कठिन हो, ऐसा स्थान। अपरिचित = जिससे पहचान न हो। सहसा = अचानक। अद्भुत = अनोखा। निर्जन = सुनसान, ऐसा स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो। जन-शून्य = मनुष्य की उपस्थिति न होना। वणिक = बनिया। पुण्य = धर्मलाभ। आत्मबोध = आत्मज्ञान।

अभ्यास-कार्य

पाठ से

■ बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) सही विकल्प के सामने ✓ लगाइए:

1. हिरण्याभ रहता था-
   (अ) गंगा के तट पर ✓ (ब) यमुना के तट पर ☐ (स) गोदावरी के तट पर ☐
2. साधु में अनेक गुण थे, परन्तु एक अवगुण भी था। वह था-
   (अ) क्रोध करना ☐ (ब) झूठ बोलना ☐ (स) लालच करना ✓
3. हिरण्याभ ने निश्चय किया-
   (अ) दूसरे प्रांत की यात्रा करने का ☐
   (ब) किसी अन्य नगर में बस जाने का ☐
   (स) तीर्थयात्रा करने का ✓
4. मार्ग में हिरण्याभ को चिंता होने लगी-
   (अ) अपने परिवार की ☐ (ब) अपने धन की ✓ (स) अपने स्वास्थ्य की ☐
5. हिरण्याभ अपने साथ धन लेकर गया था परंतु वापस लौटा-
   (अ) धन की पोटली लेकर ☐ (ब) आत्मबोध लेकर ✓ (स) निराश होकर ☐

(ख) उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए:

1. एक दिन हिरण्याभ सोचने लगा कि उसकी आयु बहुत हो गई। (आय/आयु)
2. उसने बहुत-सी स्वर्ण-मुद्राएँ अपने पास जमा कर रखी थी। (स्वर्ण-मुद्राएँ/मालाएँ)
3. एक बार सभी तीर्थों की यात्रा कर लेनी चाहिए। (तीर्थों/गाँवों)
4. लगभग एक माह बाद हिरण्याभ तीर्थयात्रा से लौटा। (वर्ष/माह)
5. भगवान ने मुझे शिक्षा देने के लिए ही यह सब किया है। (भिक्षा/शिक्षा)

(ग) सही कथन के आगे ✓ तथा गलत के आगे ✗ लगाइए:

1. स्वर्ण मुद्राओं से हिरण्याभ मंदिर बनवाना चाहता था। ✗
2. हिरण्याभ स्वर्ण-मुद्राओं का उपयोग कर अपना जीवन-निर्वाह करता था। ✗
3. हिरण्याभ ने धन निर्जन स्थान पर एक चट्टान के नीचे छिपा दिया जिससे चोरी न हो सकें। ✗
4. हिरण्याभ को तीर्थ यात्रा के समय मार्ग में चोरों द्वारा लूट लिए जाने का भय था। ✓
5. आत्मबोध होने पर हिरण्याभ स्वर्ण-मुद्राओं की चिंता से मुक्त हो अपने रास्ते बढ़ गया। ✓

(ग) रेखा खींचकर परस्पर संबद्ध वाक्यांशों का सुमेल कीजिए:

1. हिरण्याभ ने	(अ) जन-शून्य था।
2. हिरण्याभ को सहसा	(ब) निगाह दौड़ाई।
3. मुझे धन के लोभ में	(स) एक अद्‌भुत उपाय सूझा।
4. वह स्थान	(द) बालू में दो हाथ गहरा गड्ढा खोदा।
5. उसने चारों ओर	(य) नहीं पड़ना चाहिए।

■ शुद्ध उच्चारण कीजिए:

हिरण्याभ | तीर्थयात्रा | संयासी | जन-कल्याण | उत्तरदायित्व

■ इनके उत्तर लिखिए:

1. हिरण्याभ कौन था?

हिरण्याभ एक साधु था।

2. हिरण्याभ में कौन-से गुण और अवगुण थे?

हिरण्याभ दूसरों की सहायता और प्राणीमात्र पर दया करता था परंतु वह लालची प्रवृत्ति का था।

3. हिरण्याभ तीर्थ यात्रा पर क्यों गया?

हिरण्याभ अपनी बढ़ती आयु और मृत्यु के पूर्व तीर्थ यात्रा की इच्छा से तीर्थ यात्रा पर गया।

4. प्राचीन भारत में संयासियों में क्या प्रथा थी?

प्राचीन भारत की प्रथा थी कि सन्यासी तीर्थों में एकत्रित जन समुदाय को उपदेश देते थे।

5. मार्ग में हिरण्याभ को क्या चिंता सता रही थी?

मार्ग में हिरण्याभ को अपनी स्वर्ण-मुद्राओं को लुटेरों द्वारा लूट लिये जाने का भय था।

6. लौट आने पर हिरण्याभ का सिर क्यों चकराने लगा था?

हिरण्याभ द्वारा जिस जगह पर धन गाड़ा गया था उस स्थान पर सैकड़ों शिवलिंग देखकर हिरण्याभ का सिर चकराने लगा था।

7. 'भगवान ने मुझे शिक्षा देने के लिए ही यह सब किया है।' हिरण्याभ ने क्या शिक्षा ग्रहण करने संबंधी ऐसा सोचा?

हिरण्याभ ने यह शिक्षा ग्रहण की कि संयासी को धन के लोभ में नहीं पड़ना चाहिये। जो धन किसी के काम में नहीं आता वह स्वतः नष्ट हो जाता है।

भाषा की बात

(क) इनके तीन तीन पर्यायवाची लिखिए :

1. गंगा — भगीरथी, मंदाकिनी, देवनदी
2. पर्वत — पहाड़, गिरि, शिखर

(ख) इन्हें भाववाचक संज्ञा में बदलिए :

शब्द	जातिवाचक संज्ञा
भला	भलाई
दुष्ट	दुष्टता
सरल	सरलता
कम	कमी
चालाक	चालाकी

शब्द	जातिवाचक संज्ञा
मूर्ख	मूर्खता
वीर	वीरता
मधुर	मधुरता
बुरा	बुराई
निर्धन	निर्धनता

(ग) इनके लिए एक-एक शब्द लिखिए :

1. जिससे परिचय न हो। — अपरिचित
2. जो यात्रा करें — यात्री
3. जिसका अंत न हो — अनंत
4. जिसकी ईश्वर के प्रति आस्था हो — आस्तिक
5. जिसकी ईश्वर के प्रति आस्था न हो — नास्तिक

(घ) संज्ञा पद चुनकर लिखिए :

1. गंगा के तट पर एक साधु रहता था। — गंगा
2. हिरण्याभ ने यात्रा प्रारंभ कर दी। — हिरण्याभ
3. उसने सत्तू को एक पोटली में बाँध लिया। — सत्तू
4. उसे दुर्गम चट्टानें भी चढ़नी थी। — चट्टान
5. डाकू यात्रियों को लूट लेते थे। — डाकू

(ङ) निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाओं का काल लिखिए :

1. आप यात्रा पर कब जायेंगें? — भविष्य
2. मैं कल यात्रा पर गया था। — भूतकाल
3. बच्चे हँस रहे हैं। — वर्तमान
4. मैं भी खेलूंगा। — भविष्य

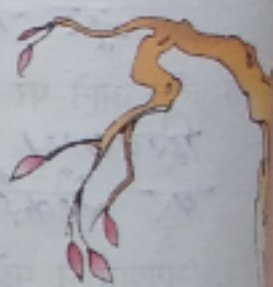

कुछ करने की बात

(क) यात्रा करते समय किन विशेष बातों का ख्याल रखना चाहिए? कक्षा को बताइए।

(ख) आपको एक महीने के लिए नाना के घर जाना हैं आप अपने साथ घर में किन वस्तुओं को ले जाना आवश्यक समझेगें? उनकी एक सूची बनाइए।